॥ श्रीगणेशायनम ॥

भाषाचन्द्रिका ।

॥ दोहा ॥

श्री शङ्कर गुरु पद कमल, बन्दि सदा सुखमूल ।
विरचत भाषाचन्द्रिका, हिन्दी भाषा मूल ॥

प्रथम अध्याय ।

भाषा उसे कहते है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन का विचार प्रकाश करता है ।

जिसमें लिखने और बोलने की शुद्ध रीति वर्णन की गई है उसे व्याकरण कहते हैं ।

हिन्दी व्याकरण में वर्णविचार, शब्दविचार और वाक्यविचार इन तीन विषयों का वर्णन है ।

वर्णविचार में अक्षरों के आकार, उच्चारण और उनके स्थानादि का वर्णन है । शब्दविचार में शब्दों के भेद तथा उनकी व्युत्पत्ति आदि का वर्णन है । वाक्य विचार में शब्दों से वाक्य बनाने की रीतियों का वर्णन है

वर्ण या अक्षर उसे कहते हैं जिसका विभाग

हो सके।

वर्णों से शब्द, शब्दों से वाक्य और वाक्यों से निबन्ध बनते हैं।

अक्षर दो प्रकार के होते हैं—स्वर और व्यंञ्जन।

जिस वर्ण का उच्चारण विना दूसरे किसी वर्ण की सहायता से हो सके उसे स्वर कहते हैं।

जिसका उच्चारण स्वर की सहायता विना न हो सके उसे व्यञ्जन कहते हैं।

स्वर के मुख्य तीन भेद हैं—ह्रस्व दीर्घ और प्लुत।

जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा काल लगे उसे ह्रस्व, जैसे 'राम' में 'अ' जिसके उच्चारण के लिये दो मात्रा काल लगे उसे दीर्घ जैसे 'रा' में 'आ' और जिसके उच्चारण के लिये तीन मात्रा काल लगे उसे प्लुत कहते हैं, जैसे 'गोविन्दा ३' में 'आ ३'। प्लुत स्वर के आगे ३ अंक लिखने की चाल है। अ[१], इ, उ

१ व्यञ्जन के साथ जो स्वर जोड़े जाते हैं उनका स्वरूप,
ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः

ऋ ऌ, 'ए ऐ', ओ 'औ, ये नौ मुख्य स्वर हैं आ, ई इत्यादि इन्हीं के भेद है । क खगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम य र लव शषस ये व्यञ्जन हैं । अनुस्वार और विसर्ग भी एक प्रकार व्यञ्जन[3] हैं अनुस्वार वर्ण के ऊपर और विसर्ग वर्ण के आगे लिखा जाता है । इनमें कखगघङ को क वर्ग चछजझञ को चवर्ग टठडढण को टवर्ग, तथदधन व तवर्ग, पफबभम को पवर्ग, यरलव को अन्तःस्थ औ शषसह को ऊष्म कहते हैं ।

जिसमें दो या दो से अधिक अक्षर एक में मि रहते है उसे संयुक्ताक्षर कहते है जैसे पत्थर, अल्प सत्य, इसमें त्थ, ल्प और त्य ये सयुक्त वर्ण हैं ।

संस्कृत में संयुक्त वर्ण से पहला ह्रस्व स्वर दी बोला जाता है किन्तु भाषा में ऐसा कहीं होता है यौ कहीं नहीं ।

---

१ हिन्दी भाषा में ऐ और औ य दो स्वर ऐसे विलक्षण पाये जा कि जिनका उच्चारण संस्कृत में नहीं है जैसे ... में ... और ... के ... में

२ क ख इत्यादि जो व्यञ्जन लिखे हैं उन में स्वर, मिला, हुआ है ।

३ अनुस्वार और विसर्ग को स्वर में न गिनना यह हिन्दी व्याकरणकर्त्ताओं की गलती है ।

भाषा में संयुक्त वर्ण से पहला अक्षर जहां दीर्घ ला जाता है जहां दोनों संयुक्त अक्षर एक हों, जैसे ता, भट्ठा, रस्सा, खद्दा, इत्यादि ।

जहां दो भिन्न अक्षरों का संयोग रहता है उस युक्ताक्षर से पूर्ववर्ण भाषा में प्रायः ह्रस्व ही बोला ाता है, जैसे इन्हें, उन्हें, तुम्हारा इत्यादि । कही २ सत्रह स्यावन, विस्वा इत्यादि में दीर्घ बोलते हैं ।

कविता मात्र में ऊपर कहा हुआ कोई नियम नहीं है किन्तु ह्रस्व दीर्घ की मात्रा गिनना केवल कवि की च्छा पर निर्भर है, जैसे—

युगल चरण सेवत जगत, जपत रैन दिन तोहि ।
जगमाता सरस्वति सुमिर, उक्ति युक्ति दे मोहि ॥

इस दोहे में 'सरस्वति' शब्द में 'स्व' इस संयुक्ताक्षर से पहला 'र' ह्रस्व अर्थात् एकमात्रिक बोला जाता है और इसी दोहे में 'उक्ति' 'युक्ति' इन शब्दों में 'क्ति' से पूर्व वर्ण 'उ' और 'यु' दीर्घ अर्थात् द्विमात्रिक बोला जाता है ।

मुख के जिस अवयव से जिस अक्षर का उच्चारण होता है वह उस अक्षर का स्थान कहाता है आठ हैं । किस अक्षर का कौन स्थान है ९

नीचे लिखा है।

वर्ण	स्थ
१ अ क ख ग घ ङ[1] ह	क
२ इ च छ ज झ ञ[1] य श	त
३ ऋ ट ठ ड ढ ण[1] र ष	मू
४ लृ त थ द ध न[1] ल स	द
५ उ प फ ब भ म[1]	ओ
६ ए ऐ	कण्ठ और
७ ओ औ	कण्ठ और
८ व	दन्त और

द्वितीय अध्याय।

शब्दविचार।

कान से जो सुनाई देता है उसे शब्द कहते पशु पक्षि आदि का भी शब्द कान से सुनाई देत पर व्याकरन में उसका विचार नहीं किया किन्तु मनुष्योच्चरित अर्थबोधक शब्दों ही का वि व्याकरण में होता है।

१ ङ ञ ण न म इनका स्थान नासिका भी है इसी लिये अनुनासिक कहाते हैं। कहीं २ अकारादि भी अनुनासिक हो उनके अनुनासिक गुण को बोधन कराने के लिये ँ अ लिखते हैं।

अर्थबोधक शब्द तीन प्रकार के हैं–संज्ञा, अव्यय
र क्रिया।

संज्ञा किसी वस्तु के नाम को कहते हैं जैसे–घड़ा
ो के एक प्रकार के बासन की संज्ञा है, काशी,
नगर का नाम है, पीपल, एक पेड़ की संज्ञा है,
ाई, एक गुण का नाम है।

संज्ञा के तीन भेद हैं– रूढ़ि यौगिक और
रूढ़ि।

रूढ़िसंज्ञा उसे कहते हैं जो किसी से न निकली
जैसे, मनुष्य घोड़ा इत्यादि।

यौगिक संज्ञा उसे कहते है जो पदों के योग से
वा प्रत्यय लगाके बनी हो जैसे—खड्गरखा अर्थात्
की रक्षा करनेवाला, सेवक—सेवा करनेवाला,
लीला—लड़कों का खेलवाड़ इत्यादि।

योगरूढ़ि संज्ञा उसे कहते है जो देखने में यौगिक
के समान मालूम पड़े पर अर्थ में इतनी
पता रखती हो कि जिन पदों के योग से
बनी हो उनका कुछ भी अर्थ न होकर एक
क्षण ही अर्थ को प्रकाश करे। जैसे–पीता-
शब्द से पीला वस्त्र धारण करनेवाला नहीं

समझा जाता किन्तु भगवान् विष्णु ही का बोध होता है इसी तरह पङ्कज शब्द से कीचड़ में उत्पन्न होने वाले कीडों का बोध नहीं होता किन्तु कमल पुष्पों का।

संज्ञा के और भी पांच भेद हैं। जातिवाचक व्यक्तिवाचक, गुणवाचक, भाववाचक और सर्वनाम।

जातिवाचक उसे कहते हैं कि जिसके कहने से जाति मात्र का बोध हो, जैसे—मनुष्य कहने से मनुष्य मात्र का बोध होता है, घोड़ा कहने से अश्वजाति का बोध होता है।

जिससे एक व्यक्ति का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक कहते हैं जैसे—रामा, विश्वेश्वरप्रसाद कालिकाप्रसाद इत्यादि।

१ जब रामा और विश्वेश्वरप्रसाद नाम को दस बारह व्यक्ति हों और रमा, विश्वेश्वरप्रसाद, पुकारने से अवश्य ही एक व्यक्ति का बोध होगा किन्तु सबों का, तब जातिवाचक से इसमें क्या भेद हुआ? इसमें भेद इतना ही है कि व्यक्तिवाचक से कहीं तो एक व्यक्ति का बोध होना सम्भव है किन्तु जातिवाचक में यह बात सर्वथा असम्भव है। जिस जातिवाचक शब्द से कहोगे अनेक व्यक्तियों ही का बोध होगा, एक व्यक्ति का कभी न होगा।

गुण[1]वाचक संज्ञा वह है जिससे किसी वस्तु का गुण प्रगट हो, जैसे—सफेद कपड़ा, कोमल फूल, नीली साड़ी इत्यादि।

भाववाचक संज्ञा वह है जिससे पदार्थ का धर्म या स्वभाव जाना जाय अथवा किसी व्यापार का बोध हो, जैसे—ऊंचाई, गहराई, बोलचाल, दौड़धूप, लेनदेन इत्यादि।

संज्ञाओं के बदले जिसका प्रयोग किया जाता है उसे सर्वनाम कहते हैं। मैं, तू, वह, यह, कोई, कौन इत्यादि सर्वनाम हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य को सुन्दरता आती है द्विरुक्ति नहीं होती अर्थात् बार २ एक ही व्यक्तिवाचक शब्द का पुनः पुनः प्रयोग नहीं करना पड़ता, जैसे "मोहन आया और वह अपनी पुस्तक उठा ले गया" यहाँ मोहन का पुनः २ प्रयोग नहीं करना पड़ा किन्तु उसके लिये 'वह' सर्वनाम लगाया गया।

सर्वनामों की यह भी प्रकृति है कि वे पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एक ही से बने रहते हैं। 'मैं' यह अपना

---

१ वास्तव में यह संज्ञा का भेद कहना उचित नहीं है किन्तु इसको कहना योग्य है क्योंकि वाक्य में और संज्ञाओं की नाईं यह कैसी नहीं आ सकती।

वाचक है, इसे उत्तम पुरुष कहते हैं । ‘तू, यह प्रतिद्वन्द्वि अर्थात् जो पुरुष सामने बात करता है उसका वाचक है इसे मध्यम पुरुष कहते हैं और ‘वह’ यह परोक्ष अर्थात् ‘मैं’ और ‘तू’ को छोड़ तीसरे का वाचक है इसे अन्य पुरुष कहते है । हम, आप, वे इत्यादि इन्हीं के बहुवचन के रूप हैं । इन तीनों को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

‘यह’ इसको निश्चयवाचक सर्वनाम, ‘कोई’ इसको अनिश्चयवाचक सर्वनाम, ‘कौन’ इसको प्रश्न वाचक सर्वनाम, ‘[1]आप’ इसको आदरप्रदर्शक सर्वनाम और ‘जो’ ‘जौन’ इत्यादि को सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं । इनके कारकों के रूप आगे लिखे जायँगे

१ आजकल शिष्टसमाज में जहां तीन आदमी देवदत्त, यज्ञदत्त और विष्णुमित्र बातचीत करते हैं वहां यज्ञदत्त से बोलते समय देवदत्त तो यज्ञदत्त को ‘आप’ कहेहीगा पर बीच में यदि विष्णुमित्र कुछ कह बैठे तो देवदत्त यज्ञदत्त से (विष्णुमित्र की ओर अंगुली दिखाकर) कहेगा कि ‘आप ऐसा कहते हैं’ वास्तव में ये ऐसा कहते हैं कहना उचित है परन्तु ‘यह’ इस निश्चयवाचक सर्वनाम के बदले ‘आप’ का प्रयोग किया जाता है । कोई कहते हैं कि अन्यपुरुष में “आप” आदेश हुआ है ।

तद्धित ।

सामान्य संज्ञाशब्दों के आगे कुछ प्रत्यय लगा देने से तथा कुछ आदेश करने से अपत्यवाचक कर्तृवाचक, भाववाचक, लघुवाचक और गुणवाचक संज्ञा सिद्ध होती है । इन्हीं को हिन्दी व्याकरणकार तद्धितान्त कहते हैं ।

शिव-शैव, विष्णु-वैष्णव, जिन जैन, बुद्ध बौद्ध वशिष्ठ वाशिष्ठ, दयानन्द-दयानन्दी, रामानन्द-रामानन्दी इत्यादि शब्दों में शिव, विष्णु आदि शब्दों से तद्धित अ, ई प्रत्यय लगे है और आदि स्वर को ऐ, औ, आ इत्यादि आदेश हुए हैं। ये अपत्यवाचक संज्ञाशब्द कहाते हैं ।

लकड़ी — लकड़िहारा, आम — आमवाला, मक्खन— मखनिया इत्यादि शब्दों में लकड़ी, आम, मक्खन आदि शब्दों से हारा, वाला इया इत्यादि प्रत्यय लगते हैं ये कर्तृवाचक संज्ञाशब्द कहाते हैं ।

चतुराई, लम्बाई, मनुष्यत्व, गम्भीरता, सच्चापन बुढ़ापा, सजावट, चिकनाहट इत्यादि शब्दों में चतुर, लम्बा, मनुष्य, गम्भीर, सच्चा, बुड्ढा, सजा, चिकना इत्यादि संज्ञाशब्दों से आई, त्व, ता, पन, पा, वट, हट

इत्यादि प्रत्यय लगा देने से भाववाचक संज्ञाशब्द सिद्ध होते हैं ।

रस्सा, नाला, डौरा, खाट इत्यादि शब्दों में आकार के स्थान में ईकार आदेश कर देने से अथवा इया प्रत्यय लगा देने से रस्सी, नाली, डौरी, खटिया इत्यादि लघुवाचक संज्ञाशब्द सिद्ध होते हैं ।

ठण्ढ—ठण्ढा—भूख—भूखा, प्रमाण—प्रामाणिक पण्डा—पण्डित, दुःख—दुःखित, झाँझ—झाँझिया बखेड़ा—बखेड़िया, रंग—रंगीला, बन—बनैला, जंगल—जंगली, दया—दयलु, झगड़ा—झगड़ालु, बल—बली श्री—श्रीमन्त, —धन—धनवान् इत्यादि शब्दों में आ इक, इत, इया, ईला, ऐला, ई, आलु, मन्त, वान् इत्यादि प्रत्यय लगे है ये सब गुणवाचक संज्ञा शब्द कहावे हैं ।

लिंग ।

संस्कृत तथा मराठी आदि देशभाषा में पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ये तीन लिङ्ग होते हैं परन्तु हिन्दी में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दो ही लिङ्ग[१] हैं ।

[१] हिन्दी भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई है इसलिये हिन्दी शब्दों का लिंगनिर्णय प्रायः संस्कृत ही के अनुसार होता है । परन्तु सन्धि पांशि आदि

भाषा में जिन शब्दों के जोड़े हैं उनका पुल्लिंग स्त्रीलिंग जानना कुछ विशेष कठिन नहीं है जैसे पुरुष—स्त्री, हाथी—हथनी घोड़ा—घोड़ी, नर—नारी इत्यादि। पर जिनके जोड़का शब्द नहीं हैं उनका लिंग जानने की साधारण रीति यह है कि इकारान्त और तकारान्त शब्दों को छोड़ बहुधा संज्ञाशब्द पुल्लिंग होते है।

जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आव, त्व पनवाप हो, वे सब पुल्लिंग होते हैं जैसे, चढ़ाव, मिलाव, मनुष्यत्व, पशुत्व, सोधापन, बुढ़ापा इत्यादि।

जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आई, ता, वट, हट, हो, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—चतुराई भलाई, उत्तमता, बनावट चिल्लाहट इत्यादि।

समास में अन्तिम शब्द के अनुसार लिंग होता है, जैसे—दयासागर, यहां दया शब्द स्त्रीलिंग होने पर भी अन्तिम शब्द सागर पुल्लिंग होने से

शब्द संस्कृत में पुल्लिंग होने पर भी हिन्दी साहित्यवाले लोग उनका स्त्रीलिंग में प्रयोग करते हैं। संस्कृत में जो नपुंसक शब्द हैं, वे हिन्दी में बहुधा पुल्लिंग हो होते हैं वास्तव में शब्दों के लिंग का कोई ठीक नियम नहीं है जो शब्द जिस लिंग में बोला जाता हो वही उसका लिंग समझना चाहिये।

दयासगर शब्द पुल्लिङ्ग हुआ। "पण्डितसभा" यहां पंडित शब्द पुल्लिङ्ग होने पर भी सभा शब्द स्त्रीलिङ्ग होने से पण्डितसभा शब्द स्त्रीलिङ्ग हुआ।

भाषा के पुल्लिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप बनाने की छः रीतियां हैं।

(१) कुछ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में ई कहीं इया, कहीं 'ञ' कर देनेसे वे स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं, जैसे—

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
चकवा	चकई या चकवी
बरछा	बरछी
लडका	लडकी
गदहा	गदही
लोटा	लुटिया
कुत्ता	कुतिया
बछडा या बछवा	बछिया

(२) कहीं अकारान्त पुल्लिग शब्दों के अन्त में "ई" लगादेने से वे स्त्रीलिंग होते हैं जैसे—

१ इन प्रत्ययों के सिवाय जहां जैसी जरूरत हो कुछ अंक्षरों का लोप वा कुछ आदेश भी कल्पना कर लेना जैसे चकई में 'व' का लोप य०। इसी तरह आगे के नियमों में भी समझना।

पु०	स्त्री०
गड़ास	गड़ासी
बिलार	बिलारी
नेउर	नेउरी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी
दास	दासी
रोट	रोटी
देव	देवी

(३) व्यवसाय करनेवालों के वाचक पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'इन' लगादेने से वे स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे-

पु०	स्त्री०
धोबी	धोबिन
तमोली	तमोलिन
कुंजड़ा	कुंजड़िन
तेली	तेलिन
कोइरी	कोइरिन
कुनबी	कुनबिन
लोहार	लोहारिन
हलुआई	हलुआइन

(४) कहीं पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'नी' लगा देने से वे स्त्रीलिंग होते है, जैसे-

पु०	स्त्री०
ऊट	ऊंटनी
बाघ	बाघिनी
सिंह	सिंहनी
हाथी	हथिनी

[५] पदवीवाचक पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में "आइन" लगा देने से वे स्त्रीलिंग होते हैं जैसे–

पु०	स्त्री०
पण्डित	पण्डिताइन
बनिया	बनियाइन
पाण्डे	पँडाइन
ओझा	ओझाइन
चौबे	चौबाइन
तिवारी	तिवराइन
पाठक	पठकाइन
मिसिर	मिसिराइन
ठाकुर	ठकुराइन
बाबू	बबुआइन
दूबे	दुबाइन
सुकुल	सुकुलाइन

(६) बहुत से पुल्लिंग शब्दों का स्त्रीलिंग बनाने में रूप ही पलट जाता है, जैसे—

पु०	स्त्री०
नर	मादी
लाल	सदिया
राजा	रानी
बैल	गाय
पिता	माता
भाई	बहिन
पुरुष	स्त्री

वचन ।

संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ऐसे तीन वचन हैं परन्तु हिन्दी में एकवचन और बहुवचन दो ही होते हैं। जिस शब्द के कहने से एक पदार्थ का बोध होता है वहां एकवचन होता है और जिसके कहने से एक से अधिक पदार्थ समझे जाते हैं वहां बहुवचन होता है। जैसे लड़का आता है। लड़के आते हैं। कहीं २ एकवचनान्त शब्द के आगे "गण" "जाति" "लोग" इत्यादि शब्द लगाकर भी बहुवचन का बोध होता है जैसे—पण्डित पढ़ाता है (एकवचन)। पंडित लोग पढ़ाते हैं (बहुवचन) ग्रह चमकता है। (एकवचन) ग्रहगण चमकते है

(बहुवचन शब्दों के एक वचन और बहुवचन के रूप आगे लिखे जायंगे।

कारक के लक्षण।

जिसके द्वारा वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ संज्ञा का ठीक २ सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे कारक कहते हैं।

हिन्दी में आठ कारक होते हैं—कर्ता, कर्म, करण सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन।

कर्ता उसे कहते हैं जो क्रिया को करे। उसका कोई चिह्न नहीं है परन्तु सकर्मक क्रिया के कर्ता के आगे अपूर्णभूत को छोड़ शेष भूतों में 'ने' आता है, जैसे लड़का पढ़ता है। पंडित पढ़ाता था। गुरूने पढ़ाया इत्यादि।

कर्म उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल रहे इसका चिह्न 'को' है जैसे नौकर को बुलाओ। घोड़ों को देखते हैं।

जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करता है उसे करण कहते हैं। इसका चिह्न 'से' है, जैसे लाठी से मारता है।

जिसके लिये कर्ता व्यापार करता है उसे सम्प्र-

	एक०	बहु०
सबन्ध	चील का, की, के	चीलों का, की के
अधिकरण	चील में, पै, पर	चीलों मे, पै, पर
संबोधन हे	चील	हे चीलो

आकारान्त पुल्लिग लड़का शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	लड़का, लड़के ने	लड़के, लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
समदान	लड़के को, के लिये	लड़कों को, के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सबन्ध	लड़के का, की, के	लडकों का, की, के
अधिकरण	लड़के में, पै, पर	लडकों में, पै, पर
बोधन	हे लड़के	हे लड़को

आकारान्त पुल्लिग दादा शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	दादा, दादा ने	दादा, दादों, दादाओंने
कर्म	दादा को	दादाओं को
करण	दादा से	दादों से, दादाओं से
संप्रदान	दादा को	दादाओं को

	एक०	बहु०
अपादान	दादा से	दादों से या दादाओं से
संबन्ध	दादा का,की,के	दादों या दादाओं का,की, के
अधिकरण	दादा में	दादों वा दादाओं में
सबोधन	हे दादा	हे दादो वा दादाओ

आकारान्त स्त्रीलिंग गैया शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	गैया, गैया ने	गैया, गैयाओं ने
कर्म	गैया को	गैयाओं को
करण	गैया से	गैयाओं से
समदान	गैया को, के लिये	गैयाओंको, के लिये
अपादान	गैया से	गैयाओं से
सम्बन्ध	गैया का, की, के	गैयाओं का, की, के
अधिकरण	गैया में, पै, पर	गैयाओं में, पै, पर
सबोधन	हे गैया	हे गैयाओं

ह्रस्व इकारान्त पुल्लिङ्ग हरि शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	हरि वा हरि ने	हरि वा हरियों ने
कर्म	हरि को	हरियों को
करण	हरि से	हरियों से
समदान	हरि को, के लिये	हरियों को, के लिये

	एक०	बहु०
अधिकरण	शालू में पै, पर	शालुओं में पै, पर
संबोधन	हे शालू	हे शालूओ

दीर्घ ऊकरान्त स्त्रीलिंग झाड़ू शब्द भी इसी के समान जानना।

एकारान्त पुलिंग पांडे शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	पांडे, पांडे, ने	पांडे, पांडेओं ने
कर्म	पांडे को	पांडेओं को
करण	पांडे से	पांडेओं से
सम्प्रदान	पांडे को, के लिये	पांडेओं को, के लिये
अपादान	पांडे से	पांडेओं से
सम्बन्ध	पांडे का, की, के	पांडेओं का, की, के
अधिकरण	पांडे में, पै, पर	पांडेओं में, पै, पर
सम्बोधन	हे पांडे	हे पांडेओ

ओकारान्त पुलिंग कोदो शब्द।

	एक०	बहु०
कर्ता	कोदो, कोदो ने	कोदो कोदोओं ने
कर्म	कोदो को,	कोदोओं को

	एक०	बहु०
संप्रदान	कोदो को, के लिये	कोदोओं को, के लिये
अपादान	कोदो से	कोदोओं से
सम्बन्ध	कोदो का, की, के	कोदोओं का, की, के
अधिकरण	कोदो में, पै, पर	कोदोओं में, पै, पर
संबोधन	हे कोदो	हे कोदोओ

[1]सर्वनामों के कारक के उदाहरण।

प्रथम (अन्य) पुरुष, वह।

	एक०	बहु०
कर्ता	वह, उसने	वे, उनने, उन्होंने
कर्म	उसको, उसे,	उनको, उन्हें, उन्हों को
करण	उससे	उनसे, उन्होंसे
संप्रदान	उसको, उसे, उसके लिये	उनको, उन्हें, उन्हों को, उनके लिये
अपादान	उससे	उनसे, उन्हों से
सम्बन्ध	उसका, की, के	उन वा उन्हों का, की, के
अधिकरण	उस में, पै, पर	उन वा उन्हों में, पै, पर
संबोधन	०	०

१ सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता।

'आप'* ।

	एक०
कर्ता	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
सम्प्रदान	अपने को, अपने लिये
अपादान	अपने से
सम्बन्ध	अपना, नी, ने
अधिकरण	अपने में, पै, पर

आदरप्रदर्शक आप ।

	एक०
कर्ता	आप, आपने
कर्म	आप को
करण	आप से
संप्रदान	आप को
अपादान	आप से
सम्बन्ध	आप का, की, के
अधिकरण	आप में, पै, पर

* इसका बहुवचन नहीं होता ।

कौन ।

	एक०	बहु०
कर्ता	कौन, किसने,	कौन वा किनने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किस से	किन से
संप्रदान	किसको, किसे	किनको किन्हें
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका, की, के	किनका, की, के
अधिकरण	किसमें, पै, पर	किन में, पै, पर

जौन ।

	एक०	बहु०
कर्ता	जो, जिसने	जो, जिनने
कर्म	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
करण	जिससे	जिनसे, जिन्हों से
संप्रदान	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
अपादान	जिससे	जिनसे जिन्हों से
सम्बन्ध	जिसका, की, के	जिन वा जिन्होंका, की, के
अधिकरण	जिस में, पै, पर	जिन में, पै, पर

होता है, जैसे महाभारत को पढ़ता हूँ, पक्षियों को मारता है इत्यादि।

और जहां वाक्य में कर्म नहीं रहता और अन्य कारकों की विवक्षा नहीं रहती वहां अन्य कारकों की जगह कर्म कारक होता है, जैसे अहीर गाय को[1] दुहता है। यहां अहीर गाय से दूध को दुहता है ऐसा तात्पर्य्य रहने पर भी गाय शब्द में अपादान कारक की विवक्षा न होने से कर्म कारक ही हुआ।

करण।

मूल्यवाचक शब्दों से कारण इत्यादि शब्द के योग में और जहां कर्ता उक्त नहीं रहता वहां और जिससे कोई वस्तु उत्पन्न हो उससे करण कारक होता

---

१ कई जगह कर्म कारक के चिह्न 'को' का लोप भी कर देते हैं। इसका कोई विशेष नियम नहीं है केवल लोक ही इसमें प्रमाण है, जैसे हम फल खाते हैं, तुम काम करते हो इत्यादि प्रयोग में 'को' का लोप करते हैं और रामा को पुकारो, घोड़े को मारो इत्यादि प्रयोग में 'को' का नहीं करते।

जहां एक ही वाक्य में कर्म और सम्प्रदान दो कारक आते हैं वहां मात्र का लोप नियम से होता है, जैसे मूर्खों को शिक्षा दो। यहां 'को' का लोप कभी नहीं हो सकता।

है, जैसे दो हजार रुपयों से हाथी मोल लिया। इस हेतु से या इस कारण[1] से वह मारा गया। मुझ से यह नहीं हो सक्ता। तुम से अब पढ़ा नहीं जा सक्ता। विद्या से प्रतिष्ठा और धन दोनों मिलते हैं।

सम्प्रदान।

जिसको कुछ दिया जाता है या जिसके लिये कुछ किया जाता है वहीं और कहीं योग्यता, औचित्य, आदर, आवश्यकता आदि प्रकाश करने में सम्प्रदान होता है, जैसे लड़कों को मिठाई दो। आप के लिये यह करता हूं। उस को यह करना योग्य नहीं है। आप लोगों को क्षमा करना ही उचित है। आपको नमस्कार, पिताजी को दण्डवत। रामदत्त को प्रयाग जाना होगा।

अपादान।

जहां बहुत वस्तुओं में से एक का निश्चय करना हो वहां अपादान कारक होता है। अपादान कारक का चिह्न 'से' अधिकरण कारक के चिह्न 'मे' से

---

१ कारण चिह्न 'से' न रहने पर भी काम चल सकता है, जैसे इस हेतु या इस कारण वह मारा गया।

आगे आता है, जैसे नाटकों में से शकुन्तला सर्वोत्तम है, उन में से पण्डितों को लाओ।

आगे, परे भिन्न, परिचय भेंट इत्यादि शब्दों के योग में अपादान कारक होता है, जैसे वह मुझसे आगे है, समुद्र से परे कुछ नहीं है, यह किताब उससे भिन्न है, रामदत्त से मेरा परिचय नहीं है, मेरे मित्र से आज भेंट हुई।

जहां किसी के गुण आदि की तुलना करना हो वहां भी अपादान कारक होता है, जैसे गोपाल से रामा अच्छा है, अर्थात् रामा के गुण गोपाल से अच्छे हैं।

सम्बन्ध।

कार्यकारणभाव, कर्तृकर्मभाव, सेव्यसेवकभाव, जन्यजनकभाव और अङ्गाङ्गीभाव में सम्बन्ध कारक होता है, जैसे बालू की दीवार, चाँदी का पानदान, पतञ्जलि का महाभाष्य, कालीदास का रघुवंश, राजा की सेवा, गोविन्ददास का लड़का, सिरके बाल, रामा के हाथ इत्यादि।

तुल्य, सदृश, समान, अधीन आदि शब्दों के योग में सम्बन्ध कारक होता है, जैसे वह पिता के तुल्य

पण्डित है, उस स्त्री का मुख चन्द्रमा के सदृश है, पृथ्वी नारंगी के समान गोल है, स्त्री को पति के अधीन रहना चाहिये।

परिमाण, मूल्य, काल, वय, योग्यता, समस्तता, भेद, सामीप्य आदि प्रकाश करने में भी सम्बन्ध कारक होता है, जैसे चार हाथ का वेंत, चार रुपये की पोथी, दो दिन की छुट्टी, बारह बरस का लड़का, पढ़ने के योग्य पुस्तक, जल और तेज का भेद, प्रयाग के समीप इत्यादि।

अधिकरण।

क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। जहां क्रिया का हेतु प्रकाशित किया जाता है वहां अधिकरण कारक होता है, जैसे वह शालाला में है, पेड़ पर फल लगे हैं, वह थाली में पकाता है, सब वस्तु में आत्मा है।

जहां अनेक में एक का निश्चय होता है वहां भी अधिकरण कारक होता है, जैसे पशुओं में हाथी बड़ा जानवर है, प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है।

हेतु के प्रकाश करने में अपादान या अधिकरण (वक्ता की इच्छानुसार) कारक होते हैं, जैसे ऐसे

युक्ति करो कि जिस में वह लक जाय अथवा जिस से वह लक जाय।

सम्बोधन।

सम्बोधन का अर्थ चिताना है सम्बोधन से मध्यम पुरुष होता है, जैसे रे देवदत्त! तू आ। तात्पर्य यह कि सम्बोधन मध्यम पुरुष के लिये आता है। इसमें कर्ता अवश्य ही प्राणी होना चाहिये पर कहीं २ कवि लोग अप्राणि के लिये भी सम्बोधन का प्रयोग कर लेते हैं अर्थात् वे अप्राणि में प्राणत्व का आरोप करते हैं, जैसे हे पर्वत! हे पृथ्वि इत्यादि।

पंचम अध्याय।

अव्यय।

अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग, वचन, कारक, आदि से कुछ विकार नहीं होता, अर्थात् जिसका स्वरूप हमेशः एक सा ही रहता है, जैसे अब, फिर इत्यादि।

अव्यय के छः भेद हैं क्रियाविशेषण, संबधबोधक, उपसर्ग, संयोजक, विभाजक और विस्मययादि बोधक।

क्रियाविशेषण।

क्रियाविशेषण अव्यय वह है जिसमें क्रिया का विशेष, काल, रीति आदि का बोध हो। यह चार प्रकार का है। कालवाचक, स्थानवाचक, भाववाचक और परिमाणवाचक।

कालवाचक।

अब	शाम	पश्चात्
तब	प्रातः	बारंबार
जब	ध्रुवः	तुरन्त
कल	तरसों	सर्वदा
फिर	परसों	कब
सदा	निदान	एकबार इत्यादि

स्थानवाचक।

यहां	तहां	समीप
वहां	इधर	पास
जहां	उधर	दूर
कहां	किधर	तिधर इत्यादि।

भाववाचक।

अचानक	तथापि	नहीं
अर्थात्	वृथा	मत

केवल	सचमुच	मानो
झटपट	हां	स्वयम्
ठीक	भी	न इत्यादि।

परिमाणवाचक।

अत्यन्त	कुछ	एक बेर
अधिक	प्रायः	इत्यादि, इत्यादि।

सम्बन्धबोधक।

जो वाक्य के एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ सबन्ध बोधन करते हैं उन्हें संबन्धबोधक कहते हैं, जैसे आगे, पीछे, संग, साथ, भीतर, बदले, तुल्य, नीचे, ऊपर, बीच इत्यादि।

उपसर्ग।

उपसर्गों का केवल का प्रयोग नही होता ये किसी न किसी के साथ ही रहते हैं। अभीतक ठेठ हिन्दी में इनके रूप बने हुए नहीं दिखाते। संसकृत में जो प्र, परा, अप आदि उपसर्ग हैं वेही हिन्दी में हैं। किसी २ शब्द में इनका योग होने से विपरीत ही अर्थ होता है, जैसे जय, पराजय।

संस्कृत में प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति

उत्, अभि, प्रति, परि, उप, कु इत्यादि उपसर्ग हैं। इनके अर्थ हमारे बनाए हुए संस्कृत सोपान में लिखे हैं।

संयोजक, विभाजक।

जो शब्द दो पदों, वाक्यों वा वाक्यखण्डों के मध्य में आते हैं और अन्वय का संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक कहते हैं, जैसे–

संयोजक		विभाजक	
और	यथा	अथवा	यथा
यदि	एव	परन्तु	किन्तु
अथ	भी	चाहे	जो
कि	पुनः	पर-	वा
तो	फिर		इत्यादि

विस्मयादिबोधक।

विस्मयादिबोधक अव्यय उसे कहते हैं जिससे अन्तःकरण का कुछ भाव या दशा प्रकाशित होती है जैसे—आह, अहह, अहा, ओहो, हाय, प्यारे, धन्य धन्य, वाह वाह, जय जय, छी छी, धीक्, दूर, फिर हरे इत्यादि।

षष्ठ अध्याय ।

समास ।

कहीं २ दो तीन वा अधिक पद अपने २ विभक्तियों को छोड़ एकत्र मिल जाते हैं और उनसे एक बड़ा शब्द बनता है इसको समास कहते हैं, जैसे 'काशी नागरीप्रचारिणी सभा' इसमें काशी + नागरी + प्रचारिणी + सभा ये चार शब्द अपनी विभक्तियों को छोड़ कर एकत्रित हुए हैं। यदि ये शब्द विभक्ति सहित कहे जॉय तो काशी की नागरी का प्रचार करने वाली सभा ऐसा कहा जायगा इसलिये 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' यह समास हुआ। इसी तरह 'दयानिधि' 'राजराज' इत्यादि शब्द जानो।

समास के छः भेद हैं। अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि और द्वन्द्व।

जहां अव्ययके साथ किसी शब्द का योग हुआ हो उसे अव्ययीभाव कहते हैं, जैसे-अतिकाल, यथाशक्ति प्रतिदिन इत्यादि।

जहां पहिला पद कर्म आदि कारक विभक्तियों से युक्त हो और दूसरा पद मुख्यार्थक हो वहां तत्पुरुष

होता है, जैसे पृथ्वीपति पाठशाला इत्यादि ।

जहां विशेष्य विशेषणों का अभेद हो वहां कर्मधारय होता है, जैसे—सच्छात्र—अच्छा, छात्र नीलघट—नीला घाडा।

जहां पहला पद संख्यावाचक हो और आगे का चाहे जैसा हो उसे द्विगुड कहते है। जैसे नवरत्न त्रिभुवन इत्यादि।

जहां कई एक पद एकत्र मिले हों और उनसे किसी अन्य पदार्थ का बोध होता हो उसे बहुव्रीहि कहते है, जैसे चतुर्भुज यहां चतुर (चार) भुज ये दो पद एकत्रित हैं और इस से अन्य पदार्थ विष्णु का बोध होता है। चन्द्रशेखर, दशानन इत्यादि उदाहरण भी इसी तरह जानो।

जिन पदोंमें समास होता है उन सब पदों का एक ही क्रिया में अन्वय हो तो उसे द्वन्द्व कहते है, जैसे रात दिन, गुरु शिष्य, माता पिता इत्यादि।

सप्तम अध्याय।

क्रिया।

क्रिया उसको को कहते हैं जिसका मुख्य अर्थ

'करना' है वह काल, पुरुष और वचन से नित्य सम्बन्ध रखती है।

क्रिया के मूल को धातु कहते हैं। धातु दो प्रकार के हैं एक सिद्ध दूसरा अनुकरण। करना, बोलना इत्यादि सिद्ध धातु हैं। हिनहिनाना, दन्दनाना चिघारना इत्यादि अनुकरण है।

धातु का चिन्ह भाषा में 'ना'[१] है अर्थात् जिस शब्द के अन्त में 'ना' हो और उसका अर्थ व्यापार हो वही धातु समझो, जैसे खाना, पीना, सोना इत्यादि।

क्रिया दो प्रकार की होती है, एक सकर्मक दूसरी अकर्मक। जहां क्रिया करने में कर्ता के व्यापार का फल दूसरे में रहे उसे सकर्मक कहते हैं, जिस में व्यापार का फल होता है उसे कर्म कहते हैं, जैसे कुम्हार वासन बनाता है। यहां कुम्हार कर्ता है उसका व्यापार मिट्टी बनाना, चाक घुमाना इत्यादि है उसका फल वासन का बनाना है सो वासन में है इस लिये वासन कर्म है और बनाना यह सकर्मक क्रिया है।

---

१ 'कोना' इस शब्द के अन्त में 'ना' है परन्तु इसका व्यापार अर्थ नहीं है इसलिये यह धातु नहीं है।

जहां कर्ता का व्यापार और फल दोनो कर्ता ही में रहे वह अकर्मक क्रिया कहती है, जैसे देवदत्त उठता है। यहां देवदत्त कर्ता के उठने का व्यापार और उसका फल उठना ये दोनों देवदत्त ही में हैं इसलिये उठना यह अकर्मक क्रिया हुई।

सकर्मक क्रिया भी दो प्रकार की है एककर्मक और द्विकर्मक। खाना यह एककर्मक है क्योंकि इस का एक ही कर्म हो सक्ता है जो कि खाया जाता है। परन्तु ले जाना इत्यादि द्विकर्मक है, अर्थात् इसके दो कर्म हैं एक तो वह वस्तु जिसको लिवा जाते हैं और दूसरा वह जहां ले जाता है।

सकर्मकक्रिया के और भी दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान, दूसरी कर्मप्रधान जिस क्रिया के लिङ्ग वचन कर्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं उसे कर्तृप्रधान कहते हैं और जिस क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं उसे कर्मप्रधान कहते हैं, जैसे—

कर्तृप्रधान	कर्मप्रधान
दर्जी कपड़ा सीता है।	कपड़ा सीया जाता है।
लड़के पढ़ते हैं।	लड़के पढ़ाये जाते हैं।

यदि कर्मप्रधान के संग कर्ता की आवश्यकता हो तो उसे करणकारक के चिह्न (से) के साथ लाना चाहिये। जैसे बाली राम से मारा गया, हम से यह नहीं किया जाता इत्यादि।

कहीं अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान के समान मिलता है और धातु अकर्मक होने से कर्मप्रधान का तो सम्भव न हो वहां उसे भावप्रधान समझो, जैसे रातभर किसी से नहीं जागा जाता, विना खाये तुम से नहीं रहा जाता, विना काम किसी से बैठा जाता है? इत्यादि।

इस से यह बात सिद्ध हुई कि जहां कर्ता में प्रत्यय होता है वह कर्तृप्रधान, जहां कर्म में प्रत्यय होता है वह कर्मप्रधान और जहां भाव में प्रत्यय होता है वह भावप्रधान। इसी को कोई लोग कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य भी कहते हैं।

क्रिया के और भी तीन भेद हैं। विधिक्रिया पूर्वकालिकक्रिया और सम्भावनार्थक्रिया।

विधिक्रिया उसे कहते हैं जिस से आज्ञा समझी जाय, जैसे मैं होऊं।

पूर्वकालिकक्रिया से लिंग वचन और पुरुष का

बोध नहीं होता और उसका काल दूसरी क्रिया से बोधित होता है, जैसे होके, होकर इत्यादि।

सम्भावनार्थक्रिया से सम्भव बोधित होता है।

पहिले कह आये हैं कि क्रिया का काल के साथ नित्य सम्बन्ध रहता है। इस काल के मुख्य तीन भेद हैं वर्तमान, भूत और भविष्य।

वर्तमानकालिकक्रिया वह है जिसका प्रारम्भ हो चुका हो परन्तु समाप्ति न हुई हो, जैसे वह लिखता है, हम देखते हैं इत्यादि।

भूतकालिकक्रिया वह है जिसकी समाप्ति हो चुकी हो, जैसे–तुमने कहा, मैंने सुना, हमने पूछा, उसने उत्तर दिया इत्यादि।

भविष्यत्कालिक क्रिया वह है जिसका प्रारंभ न हुआ हो, अर्थात् होनेवाली क्रिया को भविष्यत्कालिक क्रिया कहते हैं, जैसे मैं पढ़ूंगा, वे आवेंगे इत्यादि।

वर्तमानकालिक क्रिया के दो भेद हैं सामान्यवर्तमान और सन्दिग्धवर्तमान। सामान्यवर्तमान क्रिया से जाना जाता है कि कर्ता क्रिया को उसी समय कर रहा है। जैसे वह लिखता है और सन्दिग्धवर्तमान क्रिया से वर्तमानकालिक क्रिया का सन्देह जाना

जाता है जैसे वह खेलता होवेगा।

भूतकालिकक्रिया के छः भेद हैं। हेतुहेतुमद्भूत, अपूर्णभूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत, आसन्नभूत और सन्दिग्धभूत।

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया वहां आती है जहां कार्य और कारण का फल भूतकाल का कहना हो।

अपूर्णभूत उसे कहते हैं जिसमें भूतकाल तो पाया जाय परन्तु क्रिया पूर्ण न होगई हो।

सामान्यभूत उसे कहते हैं जिस से क्रिया की तो पूर्णता पाई जाय परन्तु भूतकाल की विशेषता न पाई जाय।

पूर्णभूत उसे कहते हैं जिसमें क्रिया की भी समाप्ति हो गई हो और उससे भूतकाल भी पाया जाय।

आसन्नभूतक्रिया से वर्तमान के पास का भूतकाल जाना जाता है।

सन्दिग्धभूत क्रिया से की हुई क्रिया में सन्देह कहा जाता है। इनके उदाहरण आगे लिखेंगे।

भविष्यत्कालिक क्रिया दो प्रकार की है एक सामान्यभविष्यत् (जिसका लक्षण पहिले कह आये हैं) दूसरी सम्भाव्यभविष्यत् जिससे भविष्यत् काल और

ऐसी बात की इच्छा जानी जाती है । उदाहरण आगे लिखे हैं।

बहुधा क्रियाओं में था, हूं, है, होऊं, होवे, होवें, हो होना धातु के रूप आते हैं इनका केवल का भी सत्ता बोधन करने के लिये प्रयोग होता है । हैं, हूं, है, इत्यादि से वर्तमान कालिक सत्ता, था थे इत्यादि से भूतकालिक सत्ता जानी जाती है।

वाक्य में क्रिया के रूप बहुधा कर्ता के अनुसार होते है, अर्थात् कर्ता एक वचनी हो तो क्रिया में भी एकवचन होता है, कर्ता बहुवचनी हो तो क्रिया भी बहुवचनान्त होती है। एवं कहीं कहीं कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया के रूप भी बदलते हैं, जैसे वह (स्त्री) जाती है, वह (पुरुष) लाता है इत्यादि ।

मैं, हम, ये कर्ता हों तो उत्तमपुरुष की, तू, तुम कर्ता हो तो मध्यम पुरुष की और इनसे अन्य कोई कर्ता हो तो अन्य पुरुष की क्रिया कहाती है।

अब पाठकों के अभ्यासार्थ कुछ धातुओं के सब कालों में उदाहरण लिखते हैं।

होना (अकर्मक धातु)

वर्तमान क्रिया ।

पुरुष कर्ता ।

	एक०	बहु०
उत्तम पुरुष	मैं होता हूं	हम होते हैं
मध्यमपुरुष	तू होता है	तुम होते हो
अन्य पुरुष	वह होता है	वे होते हैं ।

स्त्री कर्ता

उ०	मैं होती हूं	हम होती हैं
म०	तू होती है	तुम होती हो
अ०	वह होती है	वे होती हैं ।

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया ।

उ०	मैं होता	हम होते
म०	तू होता	तुम होते
अ०	वह होता	वे होते ।

स्त्री कर्ता ।

उ०	मैं होती	हम होतीं
म०	तू होती	तुम होतीं
अ०	वह होती	वे होतीं ।

पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं होता था	हम होते थे
म०	तू होता था	तुम होते थे
अ०	वह होता था	वे होते थे

स्त्री

उ०	मैं होती थी	हम होती थीं
म०	तू होती थी	तुम होती थीं
अ०	वह होती थी	वे होती थीं

सामान्यभूत क्रिया।

पुरुष

उ०	मैं हुआ	हम हुए
म०	तू हुआ	तुम हुए
अ०	वह हुआ	वे हुए

स्त्री

उ०	मैं हुई	हम हुईं
म०	तू हुई	तुम हुईं
अ०	वह हुई	वे हुईं

पूर्णभूत क्रिया।

पुरुष

उ०	मैं हुआ था

	एकवचन	बहुवचन
म०	तू हुआ था	तुम हुए थे
अ०	वह हुआ था	वे हुए थे

स्त्री

उ०	मैं हुई थी	हम हुई थीं
म०	तू हुई थी	वे हुई थीं
अ०	वह हुई थी	वे हुई थीं

आसन्नभूत क्रिया ।

पुरुष

उ०	मैं हुआ हू	हम हुए हैं
म०	तू हुआ है	तुम हुए हो
अ०	वह हुआ है	वे हुए हैं

स्त्री

उ०	मैं हुई हू	हम हुई हैं
म०	तू हुई है	तुम हुई हो
अ०	वह हुई है	वे हुई हैं

सादिग्धभूत क्रिया ।

पुरुष

उ०	मैं हुआ होऊ	हम हुए हों
म०	तू हुआ हो	तुम हुए हो

	एकवचन	बहुवचन
अ०	वह हुआ हो	वे हुए हों

स्त्री

उ०	मैं हुई होऊ	हम हुई हों
म०	तू हुई हो	तुम हुई हो
अ०	वह हुई हो	वे हुई हों

विधि क्रिया ।

पुरुष स्त्री कर्ता

उ०	तू हो	तुम हो

सम्भावनार्थ क्रिया ।

पुरुष स्त्री कर्ता

उ०	मैं होऊ	हम होवें
म०	तू होवे	तुम हो
अ०	वह होवे	वे होवे

सामान्य भविष्यत् क्रिया ।

पुरुष

उ०	मैं हुगा	हम होंगे
म०	तू होगा	तुम होगे
अ०	वह होगा	वे होंगे

स्त्री

उ०	मैं होऊंगी	हम होंगी

	एकवचन	बहुवचन
म०	तू होगी	तुम होगी
अ०	वह होगी	वे होंगी

सम्भाव्य भविष्यत् क्रिया ।

पुरुष स्त्री कर्ता

उ०	मैं हू	हम हों
म०	तू हो	तुम हो वा होओ
अ०	वह हो	वे हो

पूर्वकालिक क्रिया ।

होके होकर हो करके

करना (सकमर्क)

वर्तमान क्रिया ।

पुरुष कर्ता

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं करता हू	हम करते हैं
म०	तू करता है	तुम करते हो
अ०	वह करता है	वे करते हैं

स्त्री कर्ता

उ०	मैं करती हू	हम करती हैं
म०	तू करती है	तुम करती हो
अ०	वह करती है	वे करती हैं

हेतुहेतुमद्भूतक्रिया।

पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं करता	हम करते
म०	तू करता	तुम करते
अ०	वह करता	वे करते

स्त्री

उ०	मैं करती	हम करतीं
म०	तू करती	तुम करतीं
अ०	वह करती	वे करतीं

अपूर्णभूत क्रिया।

पुरुष

उ०	मैं करता था	हम करते थे
म०	तू करता था	तुम करते थे
अ०	वह करता था	वे करते थे

स्त्री

उ०	मैं करती थी	हम करती थीं
म०	तू करती थी	तुम करती थीं
अ०	वह करती थी	वे करती थीं

सम्भावनार्थ क्रिया ।

पुरुष स्त्री

उ० मैं करू	हम करें
म० तू करे	तुम करो
अ० वह करे	वे करें

सामान्य भविष्यत् क्रिया ।

पुरुष कर्ता

उ० मैं करूंगा	हम करेंगे
म० तू करेगा	तुम करोगे
अ० वह करेगा	वे करेंगे

स्त्री कर्ता

उ० मैं करूगी	हम करेंगी
म० तू करेगी	तुम करोगं
अ० वह करेगी	वे करेंगी

सम्भाव्य भविष्यत् क्रिया ।

पुरुष कर्ता

उ० मैं करू	हम करें
म० तू करे	तुम करो
अ० वह करे	वे करें

पूर्वकालिक क्रिया ।

करके करकर करकर के

ऊपर कहे हुए उदाहरण कर्तृवाच्य के हैं । कर्मवाच्य में कर्ता प्रगट नहीं रहता किन्तु कर्म ही कर्ता के रूप से आता है उसके बनाने की रीति यह है कि मुख्य धातु को सामान्यभूतक्रिया के आगे जाना इसके रूपों को काल, पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार रक्खो । जैसे, वर्तमान में–मैं देखा जाता हू इत्यादि । हेतु हेतु मद्भूत में–मैं देखा जाता, वह देखा जाता, तुम देखे जाते, वह देखी जाती इत्यादि । अपूर्णभूत में–मैं देखा जाता था, तुम देखे जाते थे, वह देखी जाती थी, तुम देखी जाती थीं इत्यादि । सामान्यभूत में-मैं देखा गया, वह देखा गया, वह देखी गई, वे देखे गये इत्यादि । पूर्णभूत में–मैं देखा गया था, वह देखी गई थी, तुम देखे गये थे इत्यादि । आसन्नभूत में–वह देखा गया है, मैं देखी गई हू, तुम देखे गये हो इत्यादि । संदिग्धभूत में–मैं देखा गया होऊंगा, वे देखे गये होंगे । तु देखी गई होगी इत्यादि ।

हिंदी में वर्तमान और भविष्यत्कालिक क्रिया बनाने में कुछ २ नियम हो सक्ते हैं, जैसे वर्तमानकालिक क्रिया बनाने में धातु के आगे 'हैं, हो' इत्यादि रूप लगते हैं एव भविष्यत्कालिक क्रिया बनाने में 'गे'

'गा' इत्यादि धातु के आगे लगते हैं परन्तु भूतकालिक क्रिया बनाने में संस्कृत के सदृश ही कठिनाई है, कोई ठीक नियम नहीं हो सक्ता कहीं २ तो कुछ २ शब्द साम्य रहता है जैसे करना=किया, देना = दिया, पीना = पिया, लेना = लिया, होना = हुआ इ०। परन्तु जाना = गया इत्यादि क्रिया में एक भी अक्षर नहीं मिलता।

आदर में भी विधिक्रिया ही का प्रयोग होता है परतु रूप कुछ भिन्न रीति से बनते हैं, जैसे करना कीजिये, देना दीजिये, लिखना लिखिये, पीना पीजिये, जाना जाइये, लेना लीजिये इत्यादि। प्रायः आदर विधि में अंत में "ये" आता है।

पहिले कहा कि क्रिया दो प्रकार की होती हैं एक सकर्मक दूसरी अकर्मक। अब क्रिया का और भी एक भेद कहा जाता है जिसे प्रेरणार्थक कहते हैं। कहीं २ अकर्मक क्रिया के (धातु के) अंत्यव्यञ्जन से आ मिला देने से सकर्मक क्रिया होती है, जैसे उडना (अक०) उडाना (सक०)।

अकर्मक का प्रेरणार्थक बनाना हो तो वा मिला दीजिये। जैसे उडना उडवाना।

कुछ अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक के उदाहरण नीचे दिये हैं।

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
लगना	लगाना	लगवाना
बजना	बजाना	बजवाना
दबना	दबाना	दबवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
लटकना	लटकाना	लटकवाना
पिघलना	पिघलाना	पिघलवाना

यदि दो अक्षर का अकर्मक धातु हो और उसके बीचमें दीर्घ स्वर हो तो उसे ह्रस्व करके 'आ' और 'वा' मिला देने से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बनती है, जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
घूमना	घुमाना	घुमवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना
जीतना	जिताना	जितवाना

कई एक धातु ऐसे हैं जिनके स्वर को ह्रस्व करके 'ला' और 'लवा' लगाने से द्विकर्मक और प्रेरणार्थक बनते हैं, जैसे—

सकर्मक	द्विकर्मक	प्रेरणार्थक
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना

सीखना	सिखाना	सिखवाना

कहीं २ धातु के प्रथम स्वर को दीर्घ करने से सकर्मक बनता है और प्रेरणार्थक बनाने में केवल 'वा' लगता है, जैसे–

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
गडना	गाडना	गडवाना
मरना	मारना	मरवाना
कटना	काटना	कटवाना

कोई २ धातु तो ऐसे हैं कि जिनके सकर्मक या प्रेरणार्थक बनाने में कोई नियम ही नहीं है किंतु प्रयोग से ही समझना पडता है, जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
छुटना	छोडना	छुडवाना
फूटना	फोडना	फुडवाना
रहना	रखना	रखवाना

आना, जाना, सकना आदि क्रियाओं के प्रेरणार्थक वगैरः नहीं बनते ।

संयुक्त क्रिया ।

हिन्दी में एक संयुक्त क्रिया कहाती है जिसमें दो तीन क्रिया मिली रहती हैं जैसे—

देख आना, चलदेना, पढ़लेना, रखलेना, खा जाना,

चढ़सकना, लिखसकना, देखचुकना, आया जाया करना इत्यादि।

अष्टम अध्याय।

धातु से केवल क्रिया ही नहीं बनती किन्तु कर्तृ वाचक, कर्मवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक ये चार संज्ञा भी निकलती हैं।

कर्तृवाचक संज्ञा।

धातु के आगे वाला या हारा लगाकर धातु के चिह्न ना के आ को ए कर देने से कर्तृवाचक संज्ञा बनती है, जैसे करनेवाला, करनेहारा। स्त्री हो तो करनेवाली, करनेहारी इत्यादि।

कर्मवाचक संज्ञा।

सकर्मक धातु की सामान्यभूत क्रिया ही कर्मवाचक संज्ञा होती है, जैसे किया, किई। मारा मारी, अथवा सामान्यभूत क्रिया के आगे हुआ लगा देने से वह सिद्ध होती है, जैसे किया हुआ, की हुई इत्यादि। यद्यपि कर्मवाचक संज्ञा का रूप क्रिया के सदृश दीखता है तथापि वह क्रिया नहीं है किन्तु संज्ञा है।

भाववाचक संज्ञा ।

बहुधा धातु के चिह्न ना का लोप करने से जो शेष रहता है वही भाववाचक संज्ञा है जैसे मार पीट लूट इत्यादि । यह संज्ञा भी धातु का अर्थ देती है जो लूट का अर्थ है वही लूटने का भी है ।

कहीं २ धातु के ना का स्वर दूर करने से भी भाववाचक संज्ञा बनती है जैसे लेन देन, खान पान इत्यादि ।

क्रियाद्योतक संज्ञा ।

हेतुहेतुमद्भूत की क्रियाके तुल्य क्रियाद्योतकसंज्ञा होती है, जैसे होता, करता और उसके आगे हुआ लगा देने से भी भी क्रियाद्योतक संज्ञा सिद्ध होती है, जैसे मारता हुआ, लेता हुआ इत्यादि ।

नवम अध्याय ।

वाक्यविचार ।

कारक समेत संज्ञा और क्रिया के योग से वाक्य बनता है । वाक्य दो प्रकारके होते हैं, कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान । जिसमें कर्ता प्रधान है वह कर्तृप्रधान और जिसमें कर्म प्रधान है वह कर्मप्रधान । यद्यपि वाक्य में

सब कारक आ सक्ते हैं परन्तु उसमें कर्ता और क्रिया का होना अवश्य है और क्रिया सकर्मक हो तो उस वाक्य में कर्म को भी रक्खो यह बात कर्तृप्रधान क्रिया की है। पदों की योजना का यह क्रम है कि वाक्य के आदि में कर्ता, अन्त में क्रिया और शेष कारकों की आवश्यकता हो तो उनको बीच में रक्खो परन्तु पद सब ऐसे शुद्ध होने चाहिये कि जिनके अर्थ का आपस में सम्बन्ध हो क्योंकि पद असबद्ध होंगे तो उनकी योजना से कुछ भी अर्थ न निकलेगा और वह वाक्य भी अशुद्ध ठहरेगा।

शुद्ध वाक्य।

राजा ने बाण से हरिण को मारा।

इस कर्तृप्रधान वाक्य में राजा कर्ता, बाण करण, हरिण कर्म और मारा सामान्यभूतक्रिया है। ये सब पद शुद्ध हैं और एक पद का अर्थ दूसरे के अर्थ से मेल रखता है इस कारण सपूर्ण वाक्य का 'राजा के बाण से हरिण का मारा जाना' यह अर्थ हुआ।

असम्बद्ध वाक्य।

बनिया बसुले से कपड़े को सींचता है।

यद्यपि इस वाक्य में सब पद कारक समेत शुद्ध हैं

परन्तु एक पद का अर्थ दूसरे किसी पद के अर्थ से मेल नहीं रखता इसी कारण वाक्य का कुछ अर्थ नहीं हो सक्ता इसी लिये ऐसे वाक्य को अशुद्ध कहते हैं ।

कर्तृप्रधान क्रिया के वाक्य में जैसे कर्ता का होना अवश्य है वैसे ही कर्मप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्म का होना अवश्य है । कर्ता की कुछ अपेक्षा नहीं होती क्योंकि वहा कर्म ही कर्ता के रूप से आता है और जिन कारकों का प्रयोजन होता है उन्हें कर्म और क्रिया के बीच में रखते हैं, जैसे घोडा मारा गया, इस वाक्य में मारा गया यह कर्मप्रधान सामान्यभूत क्रिया है और घोडा कर्म, कर्ता के रूप में है इन दो ही पदों से यह वाक्य पूरा हुआ है और कारकों की आवश्यकता होती है तो उनकी भी योजना कर लेते हैं, जैसे 'आटा चक्की से पीसा जाता है' 'पहाड़ पै से पत्थर गिराया गया' ये कर्मप्रधान वाक्य हैं ।

वाक्य में जो जिस पद का विशेषण हो उसको उसी पद के पहले रखना चाहिये क्योंकि ऐसी रचना से वाक्य का अर्थ तुरन्त जाना जाता है और विशेषण अपने २ विशेष्य से पहिले न हों तो दूरान्वय के कारण अर्थ समझने में कठिनता पडती है ।

सविशेषण वाक्य।

नीर्दई सिंह ने अपनी पैनी डाढों से इस दीन हरिण को चबा डाला।

दूरान्वयी वाक्य।

पडे बैठा हुआ एक लडका छोटा घोडे पै चला जाता है। इस वाक्य का अर्थ बिना सोचे नहीं जाना जाता परन्तु इसी में विशेपणों को अपने २ विशेष्य के साथ मिला देने से देखते ही अर्थ समझ में आ जाता है, यथा—एक छोटा लडका बडे घोडे पै बैठा हुआ चला जाता है। यद्यपि ऐसे वाक्य अशुद्ध नहीं कहाते किन्तु क्लिष्ट होते हैं।

दशम अध्याय।

क्रम से क्रियाओं के उदाहरण।

हेतुहेतुमद्भूत।

मैं विद्वान् होता तो ऐसी बात क्यों कहता।

कार्य्य कारण का फल कहने के लिये सदा हेतुहेतुमद्भूत ही की नहीं किंतु और काल की भी क्रिया को लाते हैं, जैसे, मैं जाता हू तो लाता हू अथवा जाऊगा तो लाऊगा।

अपूर्णभूत।

देवदत्त यज्ञदत्त को पढ़ाता था। वह न्हाता था।

अपूर्णभूत का अर्थ पहिले बतला चुके हैं कि भूतकाल की क्रिया पूरी न हो चुकी हो। यथा, देवदत्त यज्ञदत्त को पढ़ाता था। यहा यह बात प्रत्यक्ष है कि यज्ञदत्त को देवदत्त कर्ता को पढ़ाने की क्रिया भूतकाल की है किन्तु पूरी नहीं हुई है।

सामान्यभूत।

मैं हुआ। तू सोया। वह गया। उसने काम किया घोड़ी व्याई। उसने चिडिया को पकड़ा।

सामान्यभूत क्रिया पास के और दूर के दोनों भूतकालों को जतलाती है जैसे, मैंने आज दो घडी दिन चढे रोटी खाई। विक्रम राजा बडा प्रतापी हुआ जिस के राज्य में सब प्रजा सुखी रही।

पूर्णभूत।

पूर्णभूत क्रिया को भी सामान्यभूत की जगह बोलते हैं, जैसे मैंने रोटी खाई वा खाई थी। उसने पोथी लिखी थी। उसने पेड सींचे थे। वह रहा था। वे गये थे। चीलें उड़ी थीं।

आसन्नभूत ।

उसने कूआं खोदा है। लड़की ने रोटी खाई है। लड़के ने खिलौने तोड़े हैं।

आसन्नभूतक्रिया उस जगह बोली जाती है जहां वर्तमान से थोड़े ही काल पहिले की क्रिया कहनी होती है, जैसे मैंने रोटी खाई है तथा क्रिया का कर्ता और कर्म तो वर्तमान में हो और वह क्रिया हो चुकी हो तो वहां भी आसन्नभूत क्रिया बोली जाती है, जैसे देवदत्त ने इस शाला को बैठायी है इसलिये वही इसका प्रबन्ध करेगा।

सन्दिग्धभूत ।

मैं सोया होऊं। उन्होंने खाया हो। पानी पड़ा हो।

सदिग्धभूतक्रिया वहां बोली जाती है जहां भूतकाल का निश्चय हो पर क्रिया का सन्देह हो, जैसे देवदत्त ने पेड़ काटा हो, तथा किसी धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे होना धातु की भविष्यत् क्रिया लाने से सदिग्धभूत क्रिया होती है, जैसे—
प्रश्न—तेरे लड़के ने मेरी लकड़ी तोड़ी थी?
उत्तर—तोड़ी होगी।

वर्तमान क्रिया।

वह बातें बनाता है। मैं मिट्टी का घोडा बनाता हू। राजा राज करता है।

विधि क्रिया।

तू वहा जा। तुम सवेरे ही अपने काम पै लगो।

सम्भावनार्थ क्रिया।

मैं राजा होऊ। तू पानी ले आवे तो अच्छा करे। उसका उद्योग लग जावे तो बडा आनन्द होवे।

भविष्यत् क्रिया।

लुहार की भट्ठी में आग होगी। कल वह कलकते (को) जायगा। वे आवेंगे।

पूर्वकालिक क्रिया।

जिस क्रिया को समाप्त करके दूसरी क्रिया में कर्ता प्रवृत होता है वह पूर्वकालिक क्रिया कहाती है, जैसे देवदत पगडी बाध के बाहर गया। यहा पगडी का बाधना पूर्वक्रिया और जाना उत्तर क्रिया है। इसी तरह सम्भाव्य भविष्यत् और सदिग्ध वर्तमान के भी उदाहरण स्वय बना लो।



एकादश अध्याय।

पत्रलेखन।

साम्प्रत अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के व्याकरणों में पत्र लिखने की रीति भी दिखलाई रहती है और इस विषय की वाक्यरचना में समावेश भी हो सकता है इसलिये हम भी इस विषय को बहुत * संक्षेप से यहां लिख देते हैं।

पत्र व अर्जी (प्रार्थनापत्र) लिखने में पहिले प्रशस्ति लिखी जाती है उसमें भी जिसको चिट्ठी लिखी जाय उसके नाम के पूर्व परिगणित श्री लिखने की चाल है उसका नियम नीचे के दोहे में लिखा है और भिन्न २ प्रशस्तियां आगे लिखे हुए पत्रों से ज्ञात होंगी।

दोहा।

श्री लिखिये षट् गुरुन को, स्वामि पांच रिपु चार।
तीन मित्र दो भृत्य को, एक पुत्र अरु नारि॥

छोटा बडे को या बराबरीवाले को पत्र लिखे तो प्रणाम, नमस्कार या दण्डवत् लिखे और बडा छोटे को लिखे तो आशीस या आशीर्वाद लिखे।

* पत्रादि लिखने के सविस्तर नियम आदि हमारे 'पत्रादर्श' में देख लो। कीमत सिर्फ =) है।

पत्र छोटे की ओर से बडे को।

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य विश्वेश्वराध्य पूज्यवर श्री ६ पिताजी को दासानुदास दामोदर का साष्टाग प्रणाम।

आगे आपकी आज्ञा लेके ता० ५ अगस्त को जो मैं निकला सो ता० ७ को दिनके १२ बजे पटने पंहुचा वहा आपकी चिट्ठी बाबू कान्ताप्रसाद को देकर सायं-काल तक उन्हीं के यहा आराम किया फिर रात ८ बजे के गाड़ी से वहा से रवाना होकर आज ता० ९ को काशीजी में पहुंचा रास्ते में आपकी कृपा से किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई कल से कालिज खुलने वाला है बाकी पूर्ववत् आनंद है। छोटे भैया से कहकर हफ्ते में एक चिट्ठी कुशलवृत्तात की भेजवाया करें। शुभम्।

ता० ९ अगस्ट
सन् १८९६ ई०

आपका आज्ञाकारी पुत्र
दामोदर दास।

पत्र बडे की ओर से छोटे का।

ता० २२।८।९६।

श्री चिरजीव प्राणप्रिय दामोदर को अनेक आशीर्वाद

तुम्हारा ता० ९ का पत्र पहुचा हाल मालुम हुआ। आज बाबू कान्ताप्रसाद का भी पत्र आया था अब तुम्हारी परीक्षा के दिन निकट आये हैं जहा तक हो सके शरीर के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देकर खुब अभ्यास करो बीच में तुम्हारा पढना छूटने के सबबसे कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे सहपाठी आगे निकल जाय इस बात को बारंबार सोचते रहो। यहा की फिक्र मत करना। शुभम्।

कृपाशंकर

पत्र दिल्ली दोस्त को।

कलकत्ता
८। ६। ९७।

प्रियवर!

मुझे यहा आये दो मास व्यतीत हुए। मैंने तुम्हारे पास इतनी अवधि में तीन पत्र भेजे परतु एक का भी उत्तर तुमने नहीं दिया। क्या तुम किसी कार्य में फँसे हो या आलस्य से उत्तर नहीं देते।

यदि आलस्य ही कारण हो तो मैं भी पत्र भेजना बद कर दू। यहा तुम्हारे मामा के घर से हाल मिला है कि तुम डिप्टी कलेक्टरी के लिये नामिनेट हुए हो।